|  |  |
| --- | --- |
| **प्रजापति मन्दिर**  हरिद्वार के उपनगर्‌ कनखल में स्थित दक्ष मन्दिर मुख्य तीर्थस्थल है। कनखल भगवान षिव॒ की सुसराल कहलाती है। ऐसा माना जाता है कि भगवान षिव॒ की पत्नी सती के पिता दक्ष प्रजापति ने इस स्थान पर यज्ञ किया था यज्ञ में भगवान षिव को आमन्त्रित नहीं किया गया। षिव के अपमान से क्षुब्ध होकर सती ने योगाग्नि से अपने षरीर को भस्म कर दिया था। यह देख क्रोध में आकर महादेव षिव के अनुयायी वीरभद्र ने राजा दक्ष का वध कर दिया, परन्तु बाद में महादेव ने पुर्नजीवन दिया। दक्ष प्रजापति ने बाद में पश्चाताप करते हुये इस स्थान पर भगवान षिवलिंग को स्थापना की। यहाँ पर लण्ढौरा राज्य की रानी दनकोर ने 1810 में दक्ष महादेव मुन्दिरि का निर्माण किया।  दक्ष प्रजापति मन्दिर ऑटो रिक्या अथवा टैक्सी द्वारा पहुंचा जा सकता है। रलवे स्ट्रेषन से दक्ष प्रजापति मन्दिर की दूरी लगभग 4 किमी0 है। | C:\Documents and Settings\UTDBH\Desktop\ri\daksh-temple.jpg |
| **सती कुण्ड**  कनखल-लक्सर॒ मार्ग परप्राचीन सत्री कुण्ड का अपनीइतिहास है। पुराणों के अनुसार इसीस्थान पर भगवान षिव की सुसरालकहलाती है। ऐसा माना जाता है किभगवान षिव की पत्नी सती के पिता  दक्ष प्रजापति ने इस स्थान पर यज्ञ किया था यज्ञ में भगवान षिव॒ को आमन्त्रित नहीं किया गया। षिव के अपमान से क्षुब्ध होकर स॒ती ने यज्ञ कुण्ड में कूद कर यज्ञाहति दे दी। इसी कारण यह रात कुण्ड के रूप में प्रसिद्ध हो गया है। | C:\Documents and Settings\UTDBH\Desktop\ri\tour5.jpg |
| **गुरुकूल कांगड़ी विष्वविद्यालय**  **(पुरातत्व संग्रहालय)**  यह संग्रहालय ग्रुकुल कांगड़ी विष्वविद्यालय स्थित पर्यटकों के आक्शण का मुख्य कुन्द्र है। इस संग्राहलय में मुख्यतः प्राचीन पाण्डूलिपियां, सिक्‍के, सिन्धु घाटी सभ्यता के अवषेश, कृषाण कालीन स्थापत्य कला क नमूने, प्राचीन काल से लेकर द्वितीय विष्व॒युद्ध तक के  अस्त्र-षस्त्र, महात्मा गांधी के लेख व  स्वामी श्रद्धानन्द जी के साथ किया गया पत्राचार व हिमालय पर्वतश्रेणी के अमूल्य छायाचित्रों की एक गैलरी मुख्य आकर्शण है। | C:\Documents and Settings\UTDBH\Desktop\ri\Gurukul-Kangri-University-Haridwar-Results.jpg |
| **पारद षिवलिंग**  यह पवित्र षिवलिंग कनखल स्थित हरिहर आश्रम में स्थित है।  इसके समीप ही एक प्राचीन रुद्राक्ष  का पड़ है। | **C:\Documents and Settings\UTDBH\Desktop\ri\paradshivling1.jpg** |
| **भीमगोडा कृण्ड**  महाभारत के एक प्रसंग के अनुसार प्ररमवीर भीमसेन के घोड़े को ऋशिकृष मार्ग पूर हरिद्वार के बाहर एक स्थान पर ठोकर लगी। ठोकर वाले स्थान पर एक कुण्ड बन गया. जो बाद में भीमसेन क॑ घोड़े की ठोकर से बनने क कारण भीमगाड़ा कुंड के रुप में प्रसिद्ध | **C:\Documents and Settings\UTDBH\Desktop\ri\Bhim Goda Tank in Haridwar.jpg** |
| **भूमानिकेतन मन्दिर**  कृत्रिम, चटूटानों, गुफाओं व झरनों का समन्वय कर सुन्दर पौराणिक दृष्यों का निर्माण किया गया है।ये दृष्य ज़ीवन्त व प्रृश्ठक्षेत्र प्राकृतिक होने का आभास देता है। भूमा निकेतन भूपतवाला क्षेत्र में सप्तऋशि रोड पर रिथित है। ऑटो /रिक्‍्षा अथवा टैक्सी द्वारा पहुंचा जा सकता है। रलवे स्ट्रेषन से दूरी लगभग 5 किमी0 है। | C:\Documents and Settings\UTDBH\Desktop\ri\DSCN0515.JPG |
| **भारतमाता मन्दिर**  यह मन्द्रि भारत की सनातन संस्कृति का एक अनुठा केन्द्र है। सप्तसरोवर मार्ग पर स्थित यह मन्दिर आठ मंजिला हैं। यह मन्दिर भारत॒दर्षन्‌ एवं ईश्टु देवी-देवताओं  क दुर्षन कराता है। इसका निर्माण वर्श 1983 में हुआ था। मन्दिर की हर मंजिल पर जाने हेतु लिफ्ट की व्यवस्था हैं। सबसे पर मंजिल में भगवान णिव के दर्षन होते हैं। इसके अतिरिक्त भवन में विभिन्‍न प्रान्तों का चित्रण कराया गया हैं। यह मन्दिर भूपतवाला क्षेत्र में सप्तऋशि रोड पर स्थित है।ऑटो/रिक्शा अथवा टैक्सी द्वारा  पहुंचा जा सकता है। रेलवे स्टरषन से  दूरी लगभग 5 किमी0 है। | **C:\Documents and Settings\UTDBH\Desktop\ri\3848.jpg** |
| **पावन धाम (षीष महल)**  पावन धाम मन्दिर में दर्पणों  (षीषे) के उपयोग के सुन्दर झांकियों  के दूर्षन होते हैं। यहां अर्जुन के रथ  के अनन्त प्रतिबिम्ब॒ दृष्य मनमोहक व  विस्मित कर देने वाला है।  यह मन्दिर भूपतवाला क्षेत्र में  स्थित है। ऑटो /रिक्या अथवा  टैक्सी द्वारा प्रहंचा जा सकता है।  रेलवे स्टेषन से दूरी लगभग 4  किमी0 है। | **C:\Documents and Settings\UTDBH\Desktop\ri\b_pawan_dham_haridwar.jpg** |
| **श्रीकृश्ण प्रणामी निज धाम**  **मन्दिर**  श्रीकृश्ण प्रणाली निज धाम  मन्दिर में गोवर्धन पर्वत की परिक्रमा,  समुद्र गंथन एवं सुन्दर झांकियों के  दर्षन होते हैं। इस मन्दिर के बीच में  जाकर श्रीकृश्ण भगवान के 16000  सखियों के साथ रास रचाने वाला  दृष्य मनमोहक है। जो कि कांच का  बना हुआ है। यह मन्दिर प्रणामी  सम्प्रदाय का है। यह मन्दिर भूषत॒वाला क्षेत्र में सप्तऋषि रोड़ पर स्थित हैं।  ऑटो /रिक्‍्षा अथवा टैक्सी द्वारा  पहुंचा जा सकता है। रलवे स्ट्रेपन से  दूरी लगभग 4 किमी0 है। | **C:\Documents and Settings\UTDBH\Desktop\ri\Samudr_manthan.jpg** |
| **षान्तिकूंज**  षान्तिकुज स्वयं में एक आस्था व जागरण का कुन्द्र बन गयहै। इसकी स्थापना आचार्य श्रीराम पर्मा हारा को गयी थी। यहां के साधकों को गायत्री परिवार के रूप में जाना जाता है। पान्तिकूज में हजारों की संख्या में साधकों के प्रवास॒ की व्यवस्था है व विदेषी  पर्यटकों के लिये अलग विदेष विभाग  की स्थापना की गयी है। षान्तिकुंज हरिद्वार देहरादून टैक्सी द्वारा प्रहंचा जा सकता है। रेलवे स्टेषन से षान्तिकूंज की दूरी लगभग 7 किमी0 है। | **C:\Documents and Settings\UTDBH\Desktop\ri\22585531.jpg** |
| **देव संस्कृति विष्वविद्यालय**  देव संस्कृति विष्वविद्यालय,  हरिद्वार उस स्वप्न का मूर्त रूप है  जो गायत्री तीर्थ, षान्तिकूंज के  संस्थापक महान विचारक पं0 श्रीराम  षर्मा आचार्य ने व॒र्शों पूर्व देखा था।  यह विष्व॒विद्यालय षान्तिकुंज  के समीप स्थित है। षान्तिकज  हरिद्वार देहरादून रोड पर स्थित है।  यहां ऑटो अथवा टैक्सी द्वारा पहुंचा  जा सकता है। रेलवे स्टेपन से  षान्तिकुज की दूरी लगभग 7 किमी0  है। | **C:\Documents and Settings\UTDBH\Desktop\ri\01-devsanskritivishwavidyalaya.jpg** |
| **वैश्णव देवी मन्दिर (लाल माता मन्दिर)**  वैश्णोदेवी मन्दिर का निर्माण  वर्श 1993 में कराया गया। इस भृव्य  मन्दिर में देवी देवताओं के दर्षन बड़े  मनोहारी रूप में कराये गये हैं। यह  मन्दिर वास्तव में अनुपन है। इसमें  माँ बैश्णव देवी की गुफा बनायी गयी  है।  यह मन्दिर भूपत॒वाला क्षेत्र में  सप्तऋशि रोड़ पर स्थित हैं।  ऑटो /रिक्‍्षा अथवा टैक्सी द्वारा  दूरी लगभग 5 किमी0 है। | **C:\Documents and Settings\UTDBH\Desktop\ri\Haridwar-Vaishno Devi Temple-1.jpg** |
| **दिव्य योग पीठ**  बाबा रामदेव ने अपने आचार्य  बाल॒कृश्ण के सहयोग से 1995 में  दिव्य योग मन्दिर (ट्रस्ट) की स्थापना  की थी। स्वागी रामदेव ने योग की  असाधारण लोकप्रियता प्रदान की है।  उन्होंने सामान्य जन के मन्‌ में यह  विष्वास ज॒गाया कि योग सरलु एवं  निराप्रद है। इस सराहनीय कार्य के  लिए देषवासियों ने उन्हें सिर आंखों  पर बिठाया। कुछ संतों ने तो उन्हें  योगगुरु से लेकर योगर्शि' तक की  उपाधि से विभूशित कर दिया।  यह स्थल हरखिार दिल्‍ली  मार्ग (राश्ट्रीय राजमार्ग सं)-58) पर  हरिद्वार से 17 किमी0 व रूड़की से  13 किमी0 पर स्थित हैं यह आयुर्वेद  चिकित्सा व योग चिकित्सा का मुख्य  कूद्धू बन गया है। | **C:\Documents and Settings\UTDBH\Desktop\ri\Patanjali_center.jpg** |
| **पिरान कलियर**  यह हज़रत अलाउद्दीन अहमद  'साबिर को दरगाह है। इसे कलियर  परीफ्‌ के नाम से भी जाना जाता है।  यहां पूर प्रत्येक वर्श उस का  आयोजन होता है। यह दरगाह  इब्राहीम लोधी द्वारा 16वीं षताब्दी में  बनवाई गयी थी। रूड़की क॑ समीप  में रिथित प्रत्यूक आगन्तुक्‌ के लिये  दर्षनीय स्थल है। पिरान कलियर  हिन्दू और मुस्लिम धर्मों के बीच  एकता की एक जीवंत मिषाल है।  दरगाहू पर प्रतिवर्श भारत और  विदेषों के लाखो हिन्दू-मुस्लिम  श्रद्धालु आते हैँ। ऐसा विष्वास किया  जाता है कि दरगाह पर मनौती करने  वालों की इच्छाएं पूरी होती है। | **C:\Documents and Settings\UTDBH\Desktop\ri\klyrshrine1.jpg** |
| **चर्च रूड़की (षेरकोठी)**  सैंट एण्डज चर्च रूड़की की  स्थापना सन्‌ 1845 (जायरीन) की  मानी जाती है। इसे षेरकोठी भी  स्थित है अन्य चार षेर उत्तरी गुग्‌  नहर के किनारों पर स्थित है। |  |
| **प्रौद्योगिकी संस्थान,**  **(आई0आई0टी0) रूड़की**  आई0०आई0टी0\_\_ रूड़की को  देष की प्रथम तकनीकी षिक्षा होने  का गौख प्राप्त है। अंग्रेजों ने इसको  नींव 1847 में डाली। लगभग सात  वर्शा बाद 1854 में इसको थॉमसन  इंजीनियरिंग कॉलेज नाम दिया  गया। यह ब्रिटिष साम्राज्य में एपिया  का सबसे पुराना तकनीकी फिक्षा  संस्थान है। लिगभग 100 व्शों के अन्तराल के बाद स्वतंत्र भारत केका प्रधानमंत्री पं० जवाहर लाल नेहरू ने कॉलेज के उच्च स्तर तथा  उसकी उत्कुश्ट सेवाओं को ध्यान में  रखते हये नवम्बर 1949 में उसे देष  के प्रथम अभियांत्रिकी विष्वविद्यालय  का अधिकार पत्र प्रदान किया।  यह रूड़की विष्व॒विद्यालय के रूप में प्रसिद्ध हुआ। सन्‌ 2002 में इसे आई0आईए0टी0 का रूप में परिवर्तित कर दिया। | **C:\Documents and Settings\UTDBH\Desktop\ri\iit-r_660_082913010241.jpg** |
| **पंचलेष्वर महादेव मन्दिर**  पंचलेश्वर नाथ महादेव एक  पौराणिक स्थल है। उत्तर पश्चिम  गंगा का बहाव व पाँच पीपल के वृक्ष  इसकी विशेषतायें है, जो एक साथ  आअल्यत्र कही नहीं है।  किवदन्ती के अनुसार यहाँ पर  शिवलिंग की स्थापना द्रोपदी के द्वारा  की गई थी, तथा पाँड्व इस स्थान  पर कूछ समय ठहर थे। क्योंकि  द्रॉपदी पाचांल नरेश की पुत्री थी,  अत द्वोपदी को पाचांली भी कहा  जाता है। इसी कारण इस स्थान को  कालान्तर में पंचेलो व शिवलिंग को  पंचलेश्वर नाथ महादेव के नाम से  आना बता |  महाभारत में भी इस स्थल के  सम्बन्ध में उल्लेख मिलता है। जब  भीष्म पितामह से प्रश्न किया जाता  हैं कि यदि किसी के चरित्र पर  शिथ्या शंका हो जाये और वह झूठी  पाई जाने पर जो आत्म ग्लानि बोध  होता है तो इसका प्रायरिचत किस  प्रकार करना चाहिए। इस के उत्तर  में भीष्म पितामह विचित्र वीर्य को  कहते हैं कि जहाँ गंगा का पश्चिम  प्रवाह हो व पीपल के पाँच ह। ऐसे स्थान पर चालीस दिन तक  अग्नि चक्र क॑ मध्य बैठकर घोर तप  करना ही इसका प्रायश्चित है। उक्त  सभी विशेषता में पंचोली नामक स्थल  पर विद्यमान है।  इस स्थल पर पहुचने के लिये  हरिद्वार से सुल्तानपुर तक जो कि  22 किमी0 दूरी पूर स्थित हैं। यहां  पहुंचने हेतु शकर आश्रम हरिद्वार से  सार्वजनिक वाहन दिन भर उपलब्ध  होते है। किन्तु सुल्तानपुर से  पंचलेश्वर महादेव मन्द्रि तक जो कि  4 किमी0 है, क॑ लिये कोई समुचित  यातायात व्यवस्था नहीं है। | **C:\Documents and Settings\UTDB\Desktop\Untitled-1 copy.jpg** |
| **शहीद स्मारक कंजा बहादुरपुर**  षहीदू विजय सिंह व उनके  सहयोगी कालू सिंह द्वारा अंग्रेजो के  विरूद्ध एक संगठित क्रान्ति उद्दोश  सन्‌ 1824 में कियाग या। जिसका  विवरण ब्रिटिंष काल में लिखित  सरकारी दस्तावेज सहारनपुर  गजेट्यर” में उल्लिखित है। उत्तर  भारत में अंगेजी के विरुद्ध हुये  संगठित विद्रोहों में इस विद्रोह का  विषेश महत्व इसलिये भी हैं कि  इसके दमन के लिये अंग्रेजों को  नेपाल से सहायता मांगनी पड़ी थी।  इस विद्रोह का अन्त पढ़ीद विजय  सिंह व कालू सिंह के बलिदान के  रूप में हुआ। षहीद विजय सिंह का  स्मारक रूड़की तहसील के काजां  बहादरपर गांव में निर्मित है। | http://2.bp.blogspot.com/-X4HF3nKt21E/VnuhZDg8gUI/AAAAAAAAAEE/cnfQAYk6boQ/s400/haridwar.jpg |
| **जुटाष॑कर महादेव**  यह महाभारत कालीन मन्दिर  लक्सर॒ तहसील के खानपुर में  लक्सर॒ पुरकाजी मार्ग क॑ समीप  स्थित हैं ऐसा माना जाता हैं कि  इसका निर्माण पांडव ने अज्ञातवास  में स्वयं किया था। लण्ढरा राज्य की  रानी दुनूकोर ने इसका पुन निर्माण  करवाया था। | **C:\Documents and Settings\UTDB\Desktop\Untitled-1 copy.jpg** |
| कुृषावत घाट  यह स्थान गऊघाट के ही समीप है तथा कहा जाता है कि यहां पर दत्तात्रेय ऋशि ने एक पैर से खड़े होकर घोर तपरया की थी। गंगा के प्रवाह में उनका कृंष आदि  बह गये। उनके कृपित होने पर गंगा ने उन्हें वापस किया और इस स्थान का नाम कूषावर्त घाट पडा। यहां पुर स्नान एवं पिण्डदान का विषेश महत्व दिया जाता हैं। इस घाट का निर्माण महारानी ने कराया था। | **C:\Documents and Settings\UTDBH\Desktop\ri\Kushavarta-Ghat.jpg.jpg** |
| **श्रवणनाथ घाट**  यह स्थल कृषावर्त घाट के  दक्षिण में श्रवणनाथ ज़ी की पुण्य  स्मृति में निर्मित किया गया है।  श्रवणनाथ जी एक तृपोमूर्ति थे तथा  उन्हीं की पुण्य स्मृति में यहां मन्दिर,  विषाल पुस्तकालय एवं भवनों का  निर्माण हुआ है। इस घाट के समीप  ही दक्षिण में रामघाट स्थित्‌ है, जहां  पर बलल्‍लभ सम्प्रदाय के मुहाप्रभु की  गही है। | **C:\Documents and Settings\UTDB\Desktop\Untitled-1 copy.jpg** |
| **गऊघाट**  ब्रह्मकुण्ड के दक्षिण में कुछ ही दूरी पर स्थित्‌ इस घाट पर स्नान करने के विशय में यह प्रसिद्ध हैं कि मनुश्य गौ हत्या के पाप से मुक्ति पा जाता है। इसी स्थल पर गंगा नहर पर षताब्दी स्मारक सेतु  का निर्माण किया गया है। | **C:\Documents and Settings\UTDBH\Desktop\ri\Haridwar-Gau Ghat-2.jpg.jpg** |
| **बिल्व॒केष्वर महादेव मुन्द्रि**  षिव के प्रमुख स्थानों में एक बिल्व॒केष्वर महादेव का मन्दिर है। इस मुन्द्रि के निकट स्थित बिल्व॒ पर्वत की तलहूटी में हिमालय की पुत्री षैलजा उमा गौरी ने भगवान षिव की प्राप्ति के लिए घोर तपरया की थी। कहा जाता है कि उनकी  तपस्या से प्रसन्‍न होकर भगवान पिव॒  ने उन्हें यहां दर्षन दिए थ। | **C:\Documents and Settings\UTDBH\Desktop\ri\80065145.jpg** |
| **सुरेष्वरी देवी पीठ**  भारत हेवी इलैक्ट्रिकल्स कारखाने क॑ निकट रानीपुर वन लगभग दो किमी0 जंगल की ओर सुरकूट पर्वत पर भगवती सूुरेष्वरी का मन्दिर स्थित है। कहा जाता है कि सुरेष्वरी यानि इन्द्र ने तप कर यहां भगवती का साक्षातु दर्षन किया  था, इसलिए इस स्थान का नाम सुरेष्वरी देवी पड़ा। दीपावली के दिन आने वाले दो पनिवार को सुरेष्वरी देवी का भकक्‍तगण खटटा अर्थात्‌ अवले की पूजा करते हैं, यह  परम्परा आज भी जारी है। | **C:\Documents and Settings\UTDBH\Desktop\ri\SureshwariDeviTemple_24056.jpg** |
| **गौरीषंकर मन्दिर.**  प्राचीन गौरीष॑कर मन्दिर पार्वती के प्रेम का प्रतीक है। इसी स्थान प्र पिवजी ने पार्वती को को बारात का ज़नवासा था। माना जाता है कि भगवान षंकर का यह प्रिय अश्रमण स्थल था तथा नील पर्वत पर अमण करते हुए प्राय : यहां आया  करते थे। तभी से यहां पर उनके मन्दिर का निर्माण कराया गया जो आज भी षिव भक्तों को प्रिय है। हम के बराबर एक नीलकृण्ठ पिवलिंग स्थित है, कहा जाता है कि यदि यह षिवलिंग किसी की बाहों में पूरी तरह आ जाये तो उसकी मनोकामना पूर्ण होती है। हरिद्वार नजीवाबाद मार्ग पर स्थित है। | **C:\Documents and Settings\UTDBH\Desktop\ri\Gauri-Shankar-Mahadev-Temple.jpg.jpg** |
| **सिद्धपीठ श्री दक्षिण काली**  **मन्दिर**  मान्यता है कि मन्दिर में  स्थित माँ काली के चरणों में  नारियल भेंट करने मात्र से ही सभी  मनोकामनायें पूर्ण हो जाती हैं।  प्रसिद्ध अनादि सिद्ध प्रीठ रलवे  स्टेषन हरिद्वार से लगभग 3  किलोमीटर की दूरी पर चीला रोड  पर स्थित है। | **C:\Documents and Settings\UTDBH\Desktop\ri\DSC02760.JPG** |
| **सिद्धपीठ श्री**  **तिलभांडेष्वर महादेव मन्दिर**  प्राचीन सिद्ध पीठ श्री  तिलभांडेष्वर महादेव मन्दिर सती  घाट कनखल में स्थित है जो कि  रेलवे स्टेषन से 3 किलोमीटर की  दूरी पर कनखल क्षेत्र के मध्य भाग  विग्रह के रूप में विख्यात मान्यता  है। षुल्क पक्ष में तिल-तिल बढ़ते है  और कुश्ण पक्ष में तिल तिल घटते  है तिल भर के चढ़ाने से समस्त  भक्तों के सभी मनोरथ पूर्ण करते है।  भगवान श्री तिलभांडेष्वर महादेव के  दुर्षन मात्र से ही भूतप्रत पित्रों की  मुक्ति, पुत्र प्राप्ति, विवाह, धन की  प्राप्ति, कल सर्प दोश, निवारण और  समस्त व्याधियों से मुक्ति एवं षत्रु  पुर विजय प्राप्त होती है यह प्रत्यक्ष देखा गया है | **C:\Documents and Settings\UTDB\My Documents\My Pictures\Picture\Picture 061.jpg** |
| **चुड़ामणि मन्दिर**  उत्तराखंड में एक ऐसा  अनोखा मंदिर है जहां से चोरी करने  पर मनोकामना पूरी होती है। रुड़की  क चुड़ियाला गांव स्थित प्राचीन  सिद्धपीठ चूड़ामणि देवी मंदिर मैं  न॒वरात्रों क॑ मौक पर श्रद्धालुओं की  भारी भीड़ उमड़ रही है। क्षेत्रवासियों  के अलावा दूर द्राज से श्रद्धालु  आकर मंदिर में प्रसाद चढ़ाकर माता  क दर्शन कर मन्नत मांग रहे हैं।  मंदिर क पुजारी पंडित अनिरुद्ध शर्मा  के अनुसार यह प्राचीन मंदिर  सिद्धपीठ के रूप में मान्यता रखता  है।  पुत्र प्रप्ति की इच्छा रखने  वाले दंपति मंदिर में आकर माता के  चरणों से लोकड़ा (लकड़ी का गुड़ा)  चोरी करके अपने साथ ले जाते हैं  और पुत्र रत्न प्राप्ति के बाद अपाढ़  माह में अपने पुत्र के साथ ढोल  नगड़ों सहित मां के दरबार में पहुंचते  हैं। यह प्राचीन सिद्ध प्रीढ मंदिर  कालांतर से श्रद्धालुओं की आस्था  का कूंढ्न है। यहां माता के दर्शन  करने के लिए श्रद्धालु दूर दराज़ से  आते हैं। इन दिनों मंदिर में भव्य  मेले का आयोजन भी होता है। माता  चुड़ामणि के अटूट भक्त रहे बाबा  बण्खंडी का भी मंदिर परिसर में  समाधि स्थल है। बताया जाता है कि  बाबा बण्खंडी महान भक्त एंव संत  हुए हैं। इन्होंने सन 1909 में माता की भक्ति में लीन होते हुए समाधि ले ली थी | **C:\Documents and Settings\UTDB\Desktop\churamani temple.jpg** |
| **झिलुमिल झिल**  झिलमिल॒ झील आइक्षित्‌  रिर्जव रसियाबड़ यूनिट को  उत्तराखंड सरकार द्वारा वन्य जीवों  एवं उनके पर्यावरण संरक्षण, संम्वर्धन  और विकास के प्रयोजन के लिये  पारिस्थितिकी जीव जन्तुओं,  भू आकृति, प्राकृतिक पर्यावरण और  प्राणी विज्ञान की दृष्टि से महत्वपूर्ण  होने के कारण इस स्थान को  संरक्षित क्षेत्र घोषित किया गया है।  रसियावड़ (झिल मिल झील) वन्य  संरक्षण परिक्षेत्र में इनके अतिरिक्त  वाघ, जुंगली हाथी, गुलदार, साभर  चीतल, नील गाय, जंगली सुअर  लंगूर, व॒न्दर इत्यादि जानवर भी  वहूतायत से पाये जाते हैं। रसियावड़  (झिल मिल झील) वन्य संरक्षण  परिक्षेत्र में लगभग 160 प्रकार के  स्थानीय पक्षियों की प्रजातियां पायी  जाती हैं। यह स्थल  हरिद्वार-नजीबाबाद मार्ग पुर हरिद्वार  से 18 किमी0 स्थित हैं। |  |
| **दरगाह शाह मंसूर**  दरगाह शाह मुंसूर और  दरगाह पिरान-ए-कलियर इनमें बड़ी  प्रसिद्ध है। शाह मंसुर की दरगाह  रुड़की मुख्यालय से 30 किमी दूर  थाना बुग्गावाला क्षेत्रातर्गत पड़ती है।  यहां पूर रिव उल अब्वल की चांद  की 6-7 को यहां प्र उर्स लगता  है। यह दरगाहू एक हजार वर्ष  पुरानी है। रवायत है कि जंगल के  राजा शेर भी यहां हाजिरी देने आते  हैं। इस कारण ही इस दरगाह का  नाम शाह मनशेर यानी शाह मुंसूर के  नाम से भी जाना जाता है। यहा पर  आज तक न कोई पक्की सूड़क बनी  और न ही सार्वजनिक परिवहन  महैया हो प्राया। आज यहां पर  दुरगाहू क॑ नाम पर ही एक गांव  आबाद हो गया है। उर्स में यहां बड़ी  भीड़ उमड़ती है। दरगाह की रस्में  चादर पोशी, फ़लपोशी, महफिले  मिलाद, कलशरीफ और गुशल॒ शरीफ  अदा होती है। मिया जब्बार बताते हैं  कि यहां मुर्ग की ही नियाज चढ़ती  हैं। दो रोटी और दो बोटी नियाज्‌  यहां चढ़ाई जाती है। इससे  जायरीनों की मिन्‍्नतें पूरी होती हैं। | **C:\Documents and Settings\UTDB\Desktop\IMG-20171106-WA0033.jpg** |
| **प्रेम नगर आश्रम**  प्रेम नगर आश्रम श्री हंस  ज़ी महाराज द्वारा स्थापित प्रमुख |.  आश्रम हैं जगत जाननी श्री माता जी।  और श्री सतपाल जी महाराज द्वारा  विकसित किया गया है। प्रेम नगर  आश्रम गंगा के तट पर स्थित पवित्र  तीथ स्थलों में से एक है। श्री प्रेम  नगर आश्रम हरिद्वार शहर से 2  किलोमीटर दूर, ज्वैलपुर रोड पर  स्थित है। यह आध्यात्मिक अभ्यास  के लिए एक आदर्श और शांत स्थल  है। योगीराज सतगुरुदेव श्री हंस जी  महाराज द्वारा सन्‌ 1944 में स्थापित  हुआ था। प्रेम नगर सेवा और ध्यान  के ज़ूड़वां आद्शो को दर्शाता हैं।  जैसे ही कोई व्यक्ति सामने के द्वार  में प्रवेश करता हैं, वह शांति के  आभा का अनुभव करता है। मुख्य  मार्गमार्ग को रेखांकित करने वाले  ग्रंथों के उद्धरण सभी धर्मों की  मौलिक एकता को दशति हैं, जो  आत्म प्राप्ति और ईश्वर के साथ  व्यक्तिगत आत्मा का विलय होता है। | **C:\Documents and Settings\UTDB\My Documents\Downloads\archive (45)\pna02.jpg** |
| **कांगड़ी स्थित गुरुकुल कांगड़ी विष्वविद्यालय का प्राचीन भवन**  बीसवीं षताब्दी के आरम्भ में  हरिद्वार से लगभग 10 किमी0 की  दूरी पर गंगा के तट पर नील पूर्वत  की तलहटी में कांगड़ी ग्राम में स्वामी  श्रद्धानन्द जी महाराज ने अपने गुरु  स्वामी दयानन्द सरस्वती के फिक्षा  सम्बँ्धी विचारों को व्यवहारिक  स्वरूप देने के लिये सन्‌ 1902 में  गुरुकल कांगड़ी विष्व॒विद्यालय की  स्थापना की थी। 1924 में आई बाढ़  क कारण गंगा नदी द्वारा अपने रुख  बदलने के कारण विष्वविद्यालय को  प्राचीन भवन के स्थान पर नये  परिसर में स्थापित किया गया। जहां  पर वर्तमान में गुरु कूल कांगड़ी  विष्वविद्यालय स्थित है। कांगड़ी  स्थित प्राचीन भवन वर्तमान मं  देखरेख क आभाव में जर्जर स्थिति  में है इस प्राचीन भवन के  ऐतिहासिक महत्व को देखते हुए इस  भवन का पुर्ननिमण कर इसे  म्यूजियम आदि के रूप में विकसित  कर पर्यटकों के आकर्शण का केन्द्र  बनाया जा सकता है। | **C:\Documents and Settings\UTDB\Desktop\Unused Desktop Shortcuts\archive\archive\IMG_20180127_151244.jpg** |
| **नारायणीशिला,मायापुर हरिद्वार**  धर्मनगरी हरिद्वार के नारायणी शिला पर तर्पण करने से पितरों को मोक्ष को प्राप्ति होती है। पुराणों में भी ऐसा उल्लेख मिलता है। हिन्दू समाज में मान्यता हैं कि पितपक्ष में 16 दिन तक पितृ पृथ्वी पर आते है। इसलिए इन दिनों में लोगों को ऐसा कोई कार्य नहीं करना चाहिए,  जिससे पितगण नाराज हो, नारायणी शिला की यह है मान्यता एक बार गयासुर नारायण से मिलने बद्रीधाम पहुंचे, लेकिन धाम का द्वार बंद मिला। इस प्रर गयासुर वहां रखे भगवान नारायण के  कमलासन को उठाकर ले जाने लगा। इस पर श्रीनारायण प्रकट हुए और कमलासन को वहीं रखने को कहा। इसी दौरान गयासुर ने श्रीनारययण को युद्ध क॑ लिए  ललकारा। थऔनारायण ने गदा से प्रहार किया तो गयासुर ने कम॒लासन आगे कर दिया। इससे कमलासन का एक भाग दूटकूर वहीं गिरा, जिसे आज बद्रीधाम में ब्रह्म कपालू के नाम से जाना जाता हैं। इसका दूसरा भाग दूटकर हरिद्वार व तीसरा भाग गया में गिरा। इससे यह तीनों स्थल पवित्र माने गए हैं। श्रीनारायण ने कहा कि जो भी जीव मुक्ति इच्छा के लिए इन तीनों स्थानों पर तर्पण करेगा उसे मुक्ति मिल जाएगी। | **C:\Documents and Settings\UTDB\My Documents\Downloads\02_10_2015-2narayani.jpg** |